अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका

डॉ. प्रभात कुमार पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
भाऊराव देवरस राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ,दुद्धी ,सोनभद्र, उत्तर प्रदेश

सारांश (Abstract)

किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास में शिक्षा का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा व्यक्ति के ज्ञान, कौशल, योग्यता और कार्यक्षमता को बढ़ाती है, जिससे वह आर्थिक गतिविधियों में प्रभावी ढंग से भाग ले सकता है। आधुनिक युग में आर्थिक विकास केवल प्राकृतिक संसाधनों या पूंजी पर निर्भर नहीं रहता, बल्कि मानव संसाधन की गुणवत्ता पर अधिक निर्भर करता है। शिक्षा मानव पूंजी के निर्माण का प्रमुख साधन है, जो उत्पादन क्षमता को बढ़ाती है और तकनीकी प्रगति को संभव बनाती है। वर्तमान समय में वैश्वीकरण, उदारीकरण और तकनीकी विकास के कारण शिक्षा का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है। शिक्षा न केवल व्यक्ति की आय और जीवन स्तर को सुधारती है, बल्कि समाज में समानता, सामाजिक जागरूकता और नवाचार को भी प्रोत्साहित करती है। इस प्रकार शिक्षा आर्थिक विकास की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण आधार के रूप में कार्य करती है।

मुख्य शब्द : शिक्षा, आर्थिक विकास, मानव पूंजी, उत्पादकता, तकनीकी विकास

प्रस्तावना

आर्थिक विकास किसी भी राष्ट्र की प्रगति, समृद्धि और सामाजिक उन्नति का महत्वपूर्ण संकेतक माना जाता है। सामान्यतः आर्थिक विकास का अर्थ केवल राष्ट्रीय आय या प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि से नहीं होता, बल्कि इसमें जीवन स्तर में सुधार, रोजगार के अवसरों का विस्तार, गरीबी और असमानता में कमी, बेहतर स्वास्थ्य एवं शिक्षा सुविधाएँ तथा सामाजिक कल्याण में वृद्धि भी सम्मिलित होती है। इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति में शिक्षा की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा व्यक्ति के ज्ञान, कौशल, दक्षता और सोचने की क्षमता का विकास करती है, जिससे वह आर्थिक गतिविधियों में अधिक प्रभावी और उत्पादक रूप से भाग ले सकता है। एक शिक्षित व्यक्ति नई तकनीकों को समझने, नवाचार करने तथा संसाधनों का कुशल उपयोग करने में सक्षम होता है। इसी प्रकार जब समाज में शिक्षा का स्तर बढ़ता है तो संपूर्ण समाज अधिक जागरूक, संगठित और प्रगतिशील बनता है, जो आर्थिक विकास को स्थायी आधार प्रदान करता है।

वर्तमान समय में ज्ञान और कौशल आधारित अर्थव्यवस्था का महत्व तेजी से बढ़ रहा है। उद्योग, व्यापार, कृषि, सेवा क्षेत्र तथा तकनीकी क्षेत्र के विकास के लिए प्रशिक्षित और शिक्षित मानव संसाधन की आवश्यकता निरंतर बढ़ती जा रही है। शिक्षा न केवल उत्पादन क्षमता को बढ़ाती है बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण, अनुसंधान, नवाचार और उद्यमिता को भी प्रोत्साहित करती है। भारत में शिक्षा के प्रसार और गुणवत्ता सुधार के लिए सरकार द्वारा समय-समय पर अनेक महत्वपूर्ण पहलें की गई हैं। प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए **सर्व शिक्षा अभियान**, विद्यालयों में विद्यार्थियों की उपस्थिति और पोषण स्तर सुधारने के लिए **मध्याह्न भोजन योजना**, तथा माध्यमिक शिक्षा के विस्तार के लिए **राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान** जैसी योजनाएँ लागू की गई हैं। इसके अतिरिक्त युवाओं के कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए **स्किल इंडिया मिशन** और डिजिटल शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए **डिजिटल इंडिया** जैसे कार्यक्रम भी प्रारंभ किए गए हैं। इन पहलों का उद्देश्य शिक्षित और कुशल मानव संसाधन का विकास करना है, जिससे देश के आर्थिक विकास को गति मिल सके।

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शिक्षा की अवधारणा और स्वरूप को स्पष्ट करना, आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना, मानव पूंजी निर्माण में शिक्षा के महत्व को समझाना तथा शिक्षा के माध्यम से आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के विभिन्न उपायों का विश्लेषण करना है।

शिक्षा की अवधारणा

शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति ज्ञान, कौशल, अनुभव और नैतिक मूल्यों को प्राप्त करता है। शिक्षा व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अर्थशास्त्र में शिक्षा को मानव पूंजी निर्माण का प्रमुख साधन माना जाता है। मानव पूंजी का अर्थ है—व्यक्ति की वह क्षमता और कौशल जो उसकी कार्यकुशलता और उत्पादकता को बढ़ाते हैं।

शिक्षा के प्रमुख स्तर निम्नलिखित हैं—

1. **प्राथमिक शिक्षा** – यह शिक्षा का प्रारंभिक स्तर है, जिसमें पढ़ना, लिखना और गणना जैसे मूलभूत ज्ञान प्रदान किए जाते हैं।
2. **माध्यमिक शिक्षा** – इसमें विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों का विस्तृत ज्ञान दिया जाता है।
3. **उच्च शिक्षा** – इसमें विशेष ज्ञान और व्यावसायिक कौशल विकसित किए जाते हैं।

इन सभी स्तरों की शिक्षा मिलकर व्यक्ति को कुशल और सक्षम बनाती है।

भारत में शिक्षा के विकास मे नीति-निर्माताओं का योगदान

भारत में शिक्षा के विकास और उसके माध्यम से आर्थिक प्रगति को गति देने में अनेक भारतीय नीति-निर्माताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। स्वतंत्र भारत में शिक्षा को राष्ट्रीय विकास का आधार मानते हुए विभिन्न नीतियाँ और आयोग गठित किए गए। **कोठारी आयोग** (1964-66) ने शिक्षा को राष्ट्रीय विकास का प्रमुख साधन बताते हुए "समान अवसर और गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा" पर बल दिया (कोठारी आयोग, 1966)। इसके आधार पर **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968** लागू की गई, जिसमें शिक्षा के विस्तार और विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा के विकास पर जोर दिया गया। बाद में **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986** तथा उसके **1992 संशोधन** ने सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा, महिला शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा के प्रसार को प्राथमिकता दी (भारत सरकार, 1986; 1992)। इसके अतिरिक्त शिक्षा को मौलिक अधिकार के रूप में स्थापित करने के लिए **शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009** लागू किया गया, जिसका उद्देश्य 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना था। इन नीतिगत प्रयासों के परिणामस्वरूप भारत में शिक्षा के प्रसार, साक्षरता दर में वृद्धि तथा मानव पूंजी के विकास को बढ़ावा मिला, जिससे देश के आर्थिक विकास को भी महत्वपूर्ण आधार प्राप्त हुआ।

आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका

(1) मानव पूंजी का निर्माण : शिक्षा मानव पूंजी के निर्माण का प्रमुख साधन है। जब व्यक्ति शिक्षित होता है, तो उसकी कार्यक्षमता और कौशल में वृद्धि होती है। इससे वह उत्पादन प्रक्रिया में अधिक प्रभावी योगदान दे सकता है।

(2) उत्पादकता में वृद्धि : शिक्षित श्रमिक अधिक कुशल होते हैं और वे आधुनिक तकनीकों का उपयोग बेहतर ढंग से कर सकते हैं। इससे उत्पादन की मात्रा और गुणवत्ता दोनों में वृद्धि होती है।

(3) तकनीकी विकास को प्रोत्साहन : तकनीकी विकास आर्थिक प्रगति का महत्वपूर्ण आधार है। शिक्षा लोगों को नई तकनीकों को समझने और अपनाने में सक्षम बनाती है। वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार भी शिक्षा के माध्यम से ही संभव होते हैं।

(4) रोजगार के अवसरों में वृद्धि : शिक्षा व्यक्ति को विभिन्न प्रकार के रोजगार प्राप्त करने के योग्य बनाती है। शिक्षित व्यक्ति बेहतर रोजगार प्राप्त कर सकता है और उसकी आय में वृद्धि होती है। इससे बेरोजगारी की समस्या कम होती है।

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

(5) उद्यमिता का विकास : शिक्षा लोगों में आत्मनिर्भरता और उद्यमिता की भावना को विकसित करती है। शिक्षित व्यक्ति नए व्यवसाय प्रारंभ करने के लिए प्रेरित होते हैं और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देते हैं।

(6) गरीबी उन्मूलन में सहायता : शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को बेहतर रोजगार और आय के अवसर प्राप्त होते हैं, जिससे उसकी आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। इस प्रकार शिक्षा गरीबी को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

(7) सामाजिक विकास को बढ़ावा : शिक्षा समाज में जागरूकता और समानता को बढ़ावा देती है। शिक्षित लोग सामाजिक समस्याओं को समझते हैं और उनके समाधान के लिए प्रयास करते हैं। इससे सामाजिक और आर्थिक विकास को गति मिलती है।

शिक्षा और आर्थिक विकास

भारत एक विकासशील देश है जहाँ आर्थिक विकास के लिए शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। भारत की बड़ी जनसंख्या को उत्पादक मानव संसाधन में बदलने के लिए शिक्षा का प्रसार आवश्यक है। वर्तमान समय में भारत सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं। प्राथमिक शिक्षा के विस्तार, तकनीकी शिक्षा के विकास तथा डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। सूचना प्रौद्योगिकी, सेवा क्षेत्र और उद्योगों के विकास में शिक्षित और कुशल मानव संसाधन का महत्वपूर्ण योगदान है। भारत के इंजीनियर, वैज्ञानिक और तकनीकी विशेषज्ञ विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना रहे हैं। भारत में स्वतंत्रता के बाद से शिक्षा के प्रसार के लिए निरंतर प्रयास किए गए हैं। समय के साथ साक्षरता दर में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। **2011 की जनगणना** के अनुसार भारत की साक्षरता दर लगभग **74 प्रतिशत** तक पहुँच गई, जो पूर्व के वर्षों की तुलना में महत्वपूर्ण प्रगति को दर्शाती है। इसके अतिरिक्त उच्च शिक्षा संस्थानों, विश्वविद्यालयों तथा तकनीकी संस्थानों की संख्या में भी निरंतर वृद्धि हुई है। भारत में आज अनेक प्रतिष्ठित तकनीकी और प्रबंधन संस्थान कार्यरत हैं, जो देश को कुशल और प्रशिक्षित मानव संसाधन प्रदान कर रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी, सेवा क्षेत्र, उद्योग तथा अनुसंधान के क्षेत्र में भारत की बढ़ती प्रगति में शिक्षित और कुशल मानव संसाधन का महत्वपूर्ण योगदान है। भारतीय इंजीनियर, वैज्ञानिक और तकनीकी विशेषज्ञ विश्व स्तर पर भी अपनी पहचान बना रहे हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि शिक्षा भारत के आर्थिक विकास को गति देने तथा देश को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

आर्थिक विकास के लिए शिक्षा में सुधार की आवश्यकता

आर्थिक विकास को गति देने के लिए शिक्षा प्रणाली में निम्नलिखित सुधार आवश्यक हैं—

- **शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार** : केवल शिक्षा का विस्तार ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसकी गुणवत्ता में सुधार भी आवश्यक है।
- **व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा** : रोजगारोन्मुख शिक्षा को बढ़ावा देने से युवाओं को रोजगार प्राप्त करने में सहायता मिलती है।
- **तकनीकी शिक्षा का विकास :** तकनीकी और वैज्ञानिक शिक्षा को बढ़ावा देना आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है।
- **ग्रामीण शिक्षा का विस्तार :** ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की सुविधाओं को बढ़ाने की आवश्यकता है।
- **महिला शिक्षा को प्रोत्साहन :** महिला शिक्षा से समाज और अर्थव्यवस्था दोनों का विकास होता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शिक्षा किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास की आधारशिला है। शिक्षा के माध्यम से मानव संसाधन का विकास होता है, जिससे व्यक्ति की ज्ञान, कौशल और कार्यक्षमता में वृद्धि होती है। एक शिक्षित और प्रशिक्षित मानव शक्ति उत्पादन प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाती है तथा आधुनिक तकनीकों के उपयोग, नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देती है। परिणामस्वरूप उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है और अर्थव्यवस्था को गति मिलती है।

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

शिक्षा न केवल आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करती है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और समावेशी विकास का मार्ग भी प्रशस्त करती है। शिक्षित समाज में जागरूकता, समानता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है, जिससे गरीबी, बेरोजगारी और सामाजिक असमानताओं को कम करने में सहायता मिलती है। इसके साथ ही शिक्षा उद्यमिता, कौशल विकास और रोजगार के नए अवसरों को भी प्रोत्साहित करती है, जो आर्थिक प्रगति के लिए आवश्यक हैं।

भारत जैसे विकासशील देश के लिए शिक्षा का महत्व और भी अधिक है, क्योंकि विशाल जनसंख्या को उत्पादक और कुशल मानव संसाधन में परिवर्तित करना देश के आर्थिक विकास की प्रमुख आवश्यकता है। स्वतंत्रता के बाद से भारत सरकार द्वारा शिक्षा के प्रसार, साक्षरता वृद्धि और कौशल विकास के लिए अनेक योजनाएँ और नीतियाँ लागू की गई हैं, जिनका सकारात्मक प्रभाव देश की अर्थव्यवस्था पर देखा जा सकता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि यदि किसी राष्ट्र को दीर्घकालिक, समावेशी और सतत आर्थिक विकास प्राप्त करना है, तो उसे शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर निवेश और सुधार करना होगा। शिक्षा की गुणवत्ता, पहुँच और व्यावहारिकता को बढ़ाने के साथ-साथ तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा को भी प्रोत्साहित करना आवश्यक है। सरकार, समाज और शैक्षणिक संस्थानों के संयुक्त प्रयासों से ही एक सशक्त शिक्षा प्रणाली का निर्माण संभव है, जो देश की आर्थिक प्रगति को स्थायी और मजबूत आधार प्रदान कर सके।

संदर्भ सूची (References)

- **कोठारी, डी.एस.** (1966). *शिक्षा और राष्ट्रीय विकास : कोठारी आयोग की रिपोर्ट (1964-66).* नई दिल्ली : भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय।
- **भारत सरकार** (1968). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1968.* नई दिल्ली : शिक्षा मंत्रालय।
- **भारत सरकार** (1986). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986.* नई दिल्ली : मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
- **भारत सरकार** (1992). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का संशोधित कार्यक्रम (Programme of Action).* नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
- **भारत सरकार** (2009). *बच्चों का निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम (Right to Education Act).* नई दिल्ली।
- **टोडारो, एम. पी. एवं स्मिथ, एस. सी.** (2012). *आर्थिक विकास (Economic Development).* नई दिल्ली : पियर्सन एजुकेशन।
- **सेन, अमर्त्य** (1999). *Development as Freedom.* ऑक्सफोर्ड : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- **शुल्ट्ज़, टी.डब्ल्यू.** (1961). *Investment in Human Capital.* अमेरिकन इकोनॉमिक रिव्यू।
- **विश्व बैंक** (World Bank) (2018). *World Development Report: Learning to Realize Education's Promise.* वाशिंगटन डी.सी.
- **भारत सरकार** (2018). *आर्थिक सर्वेक्षण (Economic Survey).* नई दिल्ली : वित्त मंत्रालय।